सफलता हेतु ये लोग सामूहिक उपवास रखते हैं। हरियाड़ तथा सोहरई इनके मुख्य त्यौहार है। बाहुय का त्यौहार इनका सबसे पवित्र त्यौहार होता है।

(iv) विवाह प्रथा (MARRIAGE SYSTEM) :- संथाली पूर्णतः बहिर्विवाही होते हैं। ये लोग हमेशा गोत्र से बाहर विवाह करते हैं। उपगोत्र के अन्तर्गत विवाह नहीं किया जाता है। बहु विवाह की प्रथा का प्रचलन नहीं है परन्तु पत्नी के बाँझ होने पर उसकी अनुमति ले कर दूसरा विवाह किया जा सकता है। प्राचीन काल में लड़के व लड़की की विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः 25 व 20 वर्ष होती थी परन्तु अब कम उम्र में ही शादियाँ होने लगी हैं। संथालों में छः प्रकार के विवाह प्रचलित हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है —

(a) नियमित विवाह या बपला :- इस प्रथा में वर पक्ष द्वारा पहल की पहल की जाती है तथा बिचौलियों (जो रैबर कहलाते हैं) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दोनों पक्षों द्वारा लड़का- लड़की पसंद हो जाने पर मंगनी की रस्म अदा की जाती है। इस समय वर पक्ष द्वारा वधु पक्ष को रुपए व कपड़े दिए जाते हैं। वधु पक्ष द्वारा वर को एक गाय व अन्य उपहार दिए जाते हैं।

(b) घर्दी जवाई :- यह प्रथा कुरूप लड़कियों हेतु अपनाई जाती है। इसमें लड़के को लड़की से विवाह करने पर एक जोड़ी बैल, खेती के औजार और कुछ चावल भी प्राप्त होता है।

(c) इतुत :- इस प्रथा में यदी कोई लड़की किसी लड़के को पसंद आ जाए तो लड़का उसके माथे पर बल

पूर्वक टिका लगा कर भाग जाता है। इसके बाद सामुहिक रूप से मिल बैठ कर उन दोनों का विवाह सम्पन्न करा दिया जाता है यदि लड़की को लड़का पसंद न हो तो उसे समुचित रूप से तलाक लेना पड़ता है।

(d) नीर बोलोक :- इस प्रथा में इतुत के विपरित लड़की प्रयत्नशील होती है और अपने मनपसंद लड़के के घर में जा कर बैठ जाती है। वर पक्ष के लोग घर में मिर्ची जला देते हैं यदि लड़की इस तिखी धुंए को सह जाती है तो माना जाता है कि उसने पति को जीत लिया।

(e) सेंगा :- यह प्रथा विधवा व तलाकशुदा स्त्रियों हेतु है इस प्रथा में स्त्रि अपनी सहेलियों के साथ पुरुष के घर जाती है वहाँ पुरुष उसके बालों व माथे में सिंदूर लगा देता है और विवाह हो जाता है।

(f) किरिन जंवाई :- यह प्रथा उन स्त्रियों हेतु है जो विवाह पूर्व गर्भवती हो जाती है। यदि कोई लड़का ऐसी लड़की से विवाह करने हेतु तैयार होता है तो उसे दो बैल, एक गाय, अनाज व कुछ धन देकर दोनों का विवाह सम्पन्न कराया जाता है।

Scanned with CamScanner